Answers to RHB–DS2/Set–1

1. (*i*) (घ) उपर्युक्त सभी
(*ii*) (ग) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(*iii*) (घ) उपर्युक्त सभी
(*iv*) (क) हमारे हृदय और दृष्टिकोण का विस्तार करता है।
(*v*) (क) धार्मिक विद्वेष की आँधी में बहना

2. (*i*) (ग) आत्मनिर्भरता
(*ii*) (घ) वह आत्मनिर्भर है।
(*iii*) (घ) आत्मा की नम्रता
(*iv*) (ग) मनुष्य को नम्र और उच्च उद्देश्य वाला होना चाहिए।
(*v*) (ग) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

3. (*i*) (क) संज्ञा पदबंध
(*ii*) (घ) क्रिया पदबंध
(*iii*) (ख) क्रियाविशेषण पदबंध
(*iv*) (क) छोटे-बड़े पशु-पक्षी
(*v*) (ग) ठीक चार बजकर दस मिनट पर वे जुलूस लेकर आए।

4. (*i*) (ख) संयुक्त वाक्य
(*ii*) (ग) सरल वाक्य
(*iii*) (ग) हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है।
(*iv*) (ग) 1–(*ii*), 2–(*iii*), 3–(*i*)
(*v*) (घ) ततँारा अपनी पारंपरिक पोशाक में रहता था और कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था।

5. (*i*) (ख) तत्पुरुष समास
(*ii*) (घ) कला का मर्मज्ञ
(*iii*) (घ) (*iii*) और (*iv*)
(*iv*) (ग) समय के अनुसार – अव्ययीभाव समास
(*v*) (घ) नीला है जो गगन – कर्मधारय समास

6. (*i*) (घ) गुस्सा करना
(*ii*) (क) दाँतों तले उँगली दबाना
(*iii*) (ग) छोटा मुँह बड़ी बात
(*iv*) (ख) पन्ने रँगना
(*v*) (ग) आड़े-हाथों लेना
(*vi*) (क) सुध-बुध खोना

7. (*i*) (ग) श्रीकृष्ण के
(*ii*) (ग) वे वृंदावन की गलियों में गाय नहीं चराते हैं।
(*iii*) (क) श्रीकृष्ण के सान्निध्य में रहकर उनका दर्शन करते रहना चाहती हैं।
(*iv*) (ग) लाल रंग की साड़ी पहनकर यमुना नदी के किनारे
(*v*) (क) चतुर

8. (*i*) (ख) ज्ञान रूपी दीपक के जलते ही अज्ञान रूपी अंधकार का नाश हो गया।

(*ii*) (ग) सुमृत्यु वही है जिसे मरने के बाद भी लोग याद करें।

9. (*i*) (ख) मानसिक

(*ii*) (ग) अमेरिका से

(*iii*) (ग) केवल (*iii*)

(*iv*) (ख) दिमाग का तनाव बढ़ जाता है।

(*v*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

10. (*i*) (क) केवल (*i*)

(*ii*) (क) वह दुख को सहज स्थिति में, जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करती है।

11. (क) 'बड़े भाई साहब' पाठ में बड़े भाई साहब ने शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया है। उनके विचार से इस शिक्षा प्रणाली में रटंत विद्या को बढ़ावा दिया गया है जो बच्चों के स्वाभाविक विकास में बाधक है। उनके दृष्टिकोण में अंग्रेजी शिक्षा पर बल देना, इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ाना तथा बीजगणित तथा रेखागणित पढ़ना व्यर्थ है। वे तर्क देते हैं कि दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या अंतर है, मगर परीक्षक यही चाहते हैं कि विद्यार्थी 'अक्षर-अक्षर' रट डालें। इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। उनका मानना है कि इस शिक्षा प्रणाली में विषयों की अधिकता होने के कारण छात्रों को खेलने-कूदने का भी समय नहीं मिलता।

हम बड़े भाई साहब के विचारों से पूरी तरह सहमत हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा को रटंत मुक्त करने की बात कही गई है। शिक्षा को रोचक बनाने के लिए खेलकूद को भी विशेष स्थान दिया गया है।

(ख) कलकत्तावासी 26 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मना रहे थे। सभी लोग इसे अपना कर्तव्य मानकर उत्साह प्रकट कर रहे थे। पूरे कलकत्ता को अभूतपूर्व ढंग से सजाया गया था। इस स्वतंत्रता समारोह में स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़कियाँ सभी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे थे। कलकत्तावासियों ने यह निर्णय लिया कि शाम चार बजकर चौबीस मिनट पर वे मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराएँगे और आजादी की प्रतिज्ञा पढ़ेंगे। इसे रोकने के लिए पुलिस ने विशेष तैयारियाँ कर रखी थीं। कार्यकर्ता लाठियाँ पड़ने पर भी अपनी जगह से नहीं हट रहे थे। स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा रहीं थीं। 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं। 160 आदमी गंभीर रूप से घायल हुए थे जिन्हें अस्पताल पहुँचाया गया। कुल मिलाकर लगभग दो सौ लोग घायल हुए। इस घटना के आधार पर कहा जा सकता है कि इस दिन जो कुछ भी हुआ अपूर्व था।

(ग) 'सुलेमान' ने चींटियों को संबोधित करते हुए कहा था कि वे किसी के लिए मुसीबत नहीं हैं, सबके लिए मुहब्बत हैं। उनके मन में मानव-जाति के साथ-साथ सभी पशु-पक्षियों के लिए दया की भावना थी। एक बार बादशाह सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुजर रहे थे। उसी रास्ते से कुछ चींटियाँ गुजर रहीं थीं। जब उन चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज सुनी तो भयभीत होकर बोलीं कि अब उन्हें घोड़ों के पैरों से बचने के लिए जल्दी से बिल में जाना चाहिए। तभी बादशाह सुलेमान ने उनकी बात सुन ली और चींटियों को आश्वासन दिया कि उनके सैनिकों द्वारा चींटियों को कोई तकलीफ नहीं होगी। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य के मन में मानव-जाति एवं सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, सहिष्णुता, त्याग, सहानुभूति व एकता का भाव जागृत करने के लिए इस कथन का प्रयोग किया गया है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने आधुनिक समाज में व्याप्त घृणा, स्वार्थ, द्वेष, भेदभाव और असहिष्णुता को दूर करने का संदेश दिया है।

12. (क) परमात्मा एक है तथा हम सब उसकी संतान हैं। 'मनुष्यता' कविता के अनुसार सबसे बड़ा विवेक यही है कि हम समझ लें कि संसार के समस्त मनुष्य हमारे बंधु हैं। व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ के लिए जीवन का उत्सर्ग कर देना चाहिए। कवि ने कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि का उदाहरण देकर मानव जाति के कल्याण हेतु सर्वस्व दान कर देने वाले महान व्यक्तियों का परिचय दिया है तथा समस्त मनुष्यों को त्याग और बलिदान का महत्व बताया है। धन जैसी तुच्छ वस्तु का अभिमान त्याग कर समस्त मानव-जाति का कल्याण करना ही मानव धर्म है।

(ख) 'कर चले हम फ़िदा'– कविता में कवि ने उन सैनिकों के बलिदान को श्रेष्ठ कहा है, जिन्होंने देश-रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी, परंतु देश का गौरव कम नहीं होने दिया। हिमालय का मस्तक झुकने नहीं दिया। लड़ते-लड़ते साँसें थमने पर और अत्यधिक ठंड से नब्ज़ तक जमने पर जिन्होंने अपने बाँकपन को कम नहीं होने दिया। कवि ने ऐसी मृत्यु को अच्छा कहा है जो देश के काम आए।

इस कविता के द्वारा कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि देश की रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। हमारे मन में यह भावना होनी चाहिए कि भले ही हमारा सिर कट जाए पर देश का सिर ऊँचा रहे। कोई भी शत्रु हमारी तरफ आँख उठाकर नहीं देखे, उसके अपवित्र कदम इस देश पर न पड़ पाएँ। इसके लिए हमारे अंदर इतनी शक्ति होनी चाहिए कि हम उसका मुहतोड़ जवाब दे सकें। इस देश की रक्षा का दायित्व हम सभी का है।

(ग) 'आत्मत्राण' कविता में 'कोई कहीं सहायक न मिले'– पंक्ति के माध्यम से कवि सहायक पर निर्भर न रहने की बात कहता है। वह अपने पौरुष के बल पर विपदाओं को चुनौती देने में विश्वास करता है। वह प्रार्थना करता है कि भले ही ईश्वर उसकी दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करें, पर इन विपदाओं का सामना करने की हिम्मत दें। वह चाहता है कि ईश्वर उसे इतना निर्भय बना दें कि वह अपनी कठिनाइयों का स्वयं ही सफलतापूर्वक सामना कर सके। इस प्रकार हमें स्वयं को ईश्वर पर पूर्णरूप से आश्रित नहीं करना चाहिए बल्कि आत्मविश्वासी बनकर ईश्वर द्वारा दिए गए कष्टों से संघर्ष करते हुए उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

13. (क) 'हरिहर काका' पाठ में लेखक मिथिलेश्वर ने तत्कालीन समाज में वृद्धों की दयनीय स्थिति को कहानी के मुख्य पात्र हरिहर काका के माध्यम से दर्शाया है। समाज में वृद्धों पर अपनों के द्वारा तरह-तरह के अत्याचार किए जाते हैं। अपने परिवार के लोभी सदस्यों द्वारा वृद्धों की धन-संपत्ति को हड़पने या कब्ज़ा करने का प्रयास किया जाता है। उन्हें विभिन्न प्रकार की प्रताड़नाएँ दी जाती हैं। उनका तिरस्कार तथा निरादर किया जाता है। वृद्धों के प्रति होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए सरकार ने 'सीनियर सिटीजन सेल' की स्थापना की है। मैं अपने मोहल्ले के बुजुर्गों पर नजर रखूँगा और कोई बुरी खबर मिलते ही इस सेल को सूचित करूँगा। मैं स्वास्थ्य एवं कानून से संबंधी गैर सरकारी संस्थाओं की मदद से भी इनकी समय-समय पर सहायता करूँगा।

(ख) बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय लगता है। उनका मानना है कि बच्चे खेलकूद में भाग लेकर समय नष्ट करते हैं। उन्हें लगता है कि खेल में विशेष रुचि रखने वाले बच्चे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते। खेलने के दौरान वे अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं और आपस में लड़ाई-झगड़ा करना सीखते हैं। छात्र-जीवन में खेलकूद का बहुत महत्व है। नई शिक्षा नीति में भी खेलकूद को विशेष स्थान दिया गया है। शारीरिक व मानसिक स्वस्थता के लिए खेलकूद अतिआवश्यक है। इससे छात्रों में अनुशासन, धैर्य व सहनशक्ति जैसे गुणों का विकास होता है। उनमें सामूहिक रूप में काम करने की भावना का संचार होता है। इस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेलकूद का विशेष महत्व है।

(ग) दो अलग-अलग धर्मों व संस्कारों वाले इफ़्फ़न और टोपी की मित्रता भारतीय समाज के लिए प्रेरक है। यह उदाहरण भारतीय समाज की उन परंपराओं पर प्रहार करता है, जिनके कारण आपसी वैमनस्य, अलगाव और सामाजिक विघटन को बल मिलता है। भारतीय समाज को एक लंबे समय से किसी-न-किसी प्रकार से स्वार्थी तत्वों द्वारा बाँटा जाता रहा है। इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की मित्रता भारतीय समाज के ऐसे व्यक्तियों के लिए एक सबक है। इस कहानी से हमें यही प्रेरणा मिलती है कि जिनसे अपनापन मिले, वे ही अपने होते हैं। फिर वे चाहे किसी भी जाति, धर्म के हों, अपने घर के हों या किसी दूसरे के घर के। मज़हबी कट्टरपन तथा सांप्रदायिक उन्माद देश की प्रगति में बाधक हैं।

14. (क) **आजादी का अमृत महोत्सव**

आजादी का अमृत महोत्सव भारतीय स्वतंत्रता दिवस के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया कार्यक्रम है। इस महोत्सव को मनाने की अवधि 75 सप्ताह यानि 15 अगस्त, 2023 तक निर्धारित की गई थी।

यह भारतीय नागरिकों को देश के प्रति प्रेम, सम्मान, गर्व और कर्तव्य की भावना सिखाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। इस महोत्सव में उन वीर सपूतों को याद किया गया जिन्होंने अपना समस्त जीवन देश को समर्पित कर दिया था। इस राष्ट्रीय महोत्सव में हर सप्ताह अलग-अलग तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी सरकारी संस्थानों में यह उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कुछ स्थानों पर रैलियाँ भी निकाली गई।

इस महोत्सव में देश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। स्कूल के बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। आजादी की 75वीं वर्षगाँठ के इस महोत्सव में भारत ने अपनी 75 सालों की उपलब्धियों से देश को अवगत कराया।

(ख) **विज्ञान : वरदान या अभिशाप**

मानव जीवन को सुखमय बनाने में विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसने ऐसी वस्तुओं का आविष्कार किया है, जिनसे मानव जीवन अत्यंत सरल बन गया है। विद्युत मशीनें, यातायात के साधन, टेलीविजन, मोबाइल और कंप्यूटर आदि ने मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिए हैं। विज्ञान की सबसे बड़ी देन है—कंप्यूटर। कंप्यूटर शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में वरदान बनकर आया है। इंटरनेट ने आज सारे विश्व को परस्पर निकट ला दिया है। इसकी मदद से घर बैठे सभी प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। एक तरफ तो विज्ञान ने हमारे सारे कार्यों को सरल बना दिया है लेकिन दूसरी तरफ कंप्यूटर और विभिन्न उपकरणों से उत्पन्न होने वाला विषैला पदार्थ मानव जीवन के लिए अत्यंत घातक है। ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या इसी का परिणाम है। सारी यातायात व्यवस्था कार्बनयुक्त ईंधन पर आधारित होने के कारण तापमान में वृद्धि होती जा रही है जिसके परिणामस्वरूप ग्लेशियर पिघलने लगा है। इस प्रकार वरदान के साथ-साथ विज्ञान ने कुछ ऐसी वस्तुएँ दी हैं जिनसे पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हो गया है।

(ग) **परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।**

कोई भी व्यक्ति जन्म से ही विद्वान नहीं होता। निरंतर अभ्यास द्वारा ही व्यक्ति महान बनता है। इतिहास में ऐसे अनेक व्यक्ति हुए जिन्होंने अपने परिश्रम व अभ्यास के बल पर बड़ी-से-बड़ी सफलता प्राप्त की। एकलव्य अभ्यास के बल पर धनुष विद्या में अर्जुन से श्रेष्ठ बना। वाल्मीकि, कालिदास आदि जड़ बुद्धि के थे लेकिन निरंतर अभ्यास करके महान कवि बने।

'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान।'

जिस प्रकार कुएँ की रस्सी से बार-बार पानी खींचने से उसकी शिला पर निशान पड़ जाता है, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास करते रहने से लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। विद्यार्थी जीवन में अभ्यास की अत्यंत आवश्यकता है। पढ़ाई, खेलकूद या किसी भी प्रकार का कौशल हो सभी में निरंतर अभ्यास करके ही दक्षता प्राप्त की जा सकती है। निरंतर अभ्यास के द्वारा औसत बुद्धि वाले विद्यार्थी भी अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। इसीलिए कहा गया है कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

15. (क) सेवा में

निगम-पार्षद महोदय

दिल्ली नगर निगम

य०र०ल० नगर, दिल्ली

दिनांक : 10 मई, 20xx

विषय : मोहल्ले में कैमरे लगवाने के संबंध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं उत्तम नगर का स्थायी निवासी हूँ। विगत कुछ महीनों से हमारे मोहल्ले में चोरी की कई घटनाएँ घट चुकी हैं जिसकी शिकायत स्थानीय थाने में की गई लेकिन अब तक न चोर पकड़ा गया और न ही चोरी का सामान बरामद हुआ। दिन-प्रतिदिन की चोरी की घटनाओं से यहाँ के निवासी भय के माहौल में जी रहे हैं।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए मोहल्ले में कुछ स्थानों पर कैमरे लगवा दीजिए ताकि बाहर से आए अनजान व्यक्ति को पहचाना जा सके और किसी भी घटना को देखा जा सके।

भवदीय

अनूप

सचिव,

मानव कल्याण संघ

अथवा

(ख) सेवा में

श्रीमान संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

दिल्ली – 110002

दिनांक : 25 जनवरी, 20xx

विषय : सार्वजनिक स्थलों पर चिपकाए जाने वाले पोस्टरों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से चुनाव के दिनों में विभिन्न राजनीतिक दल के कार्यकर्ताओं द्वारा घरों एवं सरकारी भवनों की दीवारों पर चिपकाए जाने वाले पोस्टरों से होने वाली असुविधा के कारण राजनीतिक दलों, अधिकारियों तथा जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। कृपया मेरा यह पत्र अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करके अनुग्रहीत करें। चुनाव के दिनों में विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने दल का प्रचार करने के लिए घरों की दीवारों, विद्यालयों, चौराहों तथा मार्गदर्शक चित्रों पर पोस्टर चिपका जाते हैं। इससे आम जनता को बहुत असुविधा का सामना करना पड़ता है। इससे दीवार के पेंट खराब हो जाते हैं और चारों तरफ कूड़े-कर्कट का ढेर लग जाता है।

आशा है इस समस्या के प्रति सभी राजनीतिक दल के नेता व कार्यकर्ता ध्यान देंगे तथा जनता को होने वाली सभी असुविधाओं से बचाएँगे।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

16. (क)

खादी ग्रामोद्योग भवन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

सूचना

गांधी जयंती के अवसर पर 'सेल'

दिनांक : 1 अक्टूबर, 20XX

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर खादी के सभी कपड़ों पर 20-30% तक की छूट दी जाएगी।

इसकी जानकारी निम्नलिखित प्रकार से है–

स्थान – खादी ग्रामोद्योग भवन, कनॉट प्लेस

दिनांक – 2 अक्टूबर, 20XX

प्रवेश शुल्क – निःशुल्क

आप सभी से अनुरोध है कि अधिक-से-अधिक संख्या में पहुँचकर इस भारी छूट का लाभ उठाएँ।

संयोजक

खादी ग्रामोद्योग भवन

कनॉट प्लेस,

नई दिल्ली

अथवा

(ख)

हिंदी साहित्य परिषद्

क०ख०ग० पब्लिक स्कूल, दिल्ली

सूचना

प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हिंदी साहित्य परिषद् विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन स्कूल प्रांगण में कराने जा रही है। इसका विवरण इस प्रकार है–

(*i*) चित्रकला प्रतियोगिता : 20 फरवरी, 20XX

(*ii*) वाद-विवाद प्रतियोगिता : 22 फरवरी, 20XX

(*iii*) गीत-अभिनीत प्रतियोगिता : 24 फरवरी, 20XX

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी 18 फरवरी, 20XX तक अपना नाम कक्षा अध्यापक/अध्यापिका के पास दर्ज करा दें।

अ०ब०स०

अध्यक्ष

हिंदी साहित्य परिषद्

17. (क)

पर्यावरण को बचाएँ *पर्यावरण को बचाएँ*

इलेक्ट्रीक स्कूटर का प्रयोग अधिक-से-अधिक करें।

- पर्यावरण हितैषी
- आरामदायक
- प्रदूषण एवं शोर मुक्त
- कम विद्युत खपत

पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना है।

इलेक्ट्रीक स्कूटर अधिक चलाना है।

पर्यावरण बचाओ अभियान द्वारा जनहित में जारी।

अथवा

(ख)

दुर्घटना से देर भली *नज़र हटी दुर्घटना घटी*

सड़क सुरक्षा नियमों को अगर अपनाओगे।
खुद के साथ-साथ दूसरों को भी बचाओगे।।

यातायात के नियम

- गति सीमा का ध्यान रखें।
- अनियंत्रित गति से वाहन न चलाएँ।
- शराब पीकर वाहन न चलाएँ।
- अनावश्यक हॉर्न न बजाएँ।

यातायात के नियमों का पालन करें।

यातायात पुलिस द्वारा जनहित में जारी।

18. (क) **'संतोष परमसुख'**

पंकज तेज़-तेज़ कदमों से अपने स्कूल की ओर बढ़ रहा था तभी सड़क के एक तरफ से उसे चीं-चीं की आवाज सुनाई दी। पास जाकर देखा तो एक गौरैया का घायल बच्चा चीं-चीं करके शायद मदद माँग रहा था। पंकज ने तुरंत उस घायल गौरैये को अपनी हथेली पर रखा और उसके लिए सुरक्षित स्थान तलाशने लगा। उसे थोड़ी दूर पर पेड़ की टहनी पर गौरैया का एक घोंसला नजर आया। उस घोंसले में गौरैये के कुछ और बच्चे भी थे। पंकज ने घायल गौरैये के मुँह में पानी की कुछ बूँदें डालीं और उसे धीरे से उठाकर घोंसले में रख दिया। घोंसले के अन्य बच्चे खुशी से चहचहाने लगे। पंकज को स्कूल के लिए देर हो रही थी फिर भी घायल गौरैये को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर उसे परमसुख मिला।

अथवा

(ख)

प्रेषक	– abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता	– pqr@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी)	– xyz@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी)	– mno@gmail.com

विषय – मोबाइल रिचार्ज नहीं होने के संबंध में शिकायत।

प्रबंधक महोदय,

मैं आपकी कंपनी का नियमित ग्राहक हूँ। मैंने दिनांक 9 दिसंबर, 20xx को प्लान-299 का रिचार्ज कराया था। इसके लिए मैंने पूरी राशि ऑनलाइन जमा भी करा दी थी लेकिन इस प्लान के तहत मुझे कोई सुविधा नहीं मिली। मैंने इसकी शिकायत तुरंत कस्टमर केयर अधिकारी को भी की लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ। आप यथाशीघ्र मेरे मोबाइल पर उपर्युक्त प्लान के तहत मिलने वाली सारी सुविधाएँ प्रदान करें।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०